भारत सरकार

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 2026

जिसका उत्तर 31.07.2025 को दिया जाना है

एनएच-71 पर सर्विस रोड पहुंच और एनएच-716 की फोर लेनिंग

†2026. श्री मड्डीला गुरूमूर्ति:

क्या सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएच)-71 पर रेनिगुंटा और नायडूपेटा के बीच सर्विस रोड तक न पहुंच पाने और श्रीकालहस्ती ग्रामीण से थोट्टाम्बेदु मुख्य मार्ग से मुचिवोलु और वेंकटगिरी को जोड़ने वाली पहुंच सड़क के अभाव के कारण जनता को हो रही असुविधा से अवगत है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या बार-बार स्थानीय अभ्यावेदन के आधार पर कोई क्षेत्रीय निरीक्षण या सुधारात्मक रिडिजाइन प्रयास किए गए हैं और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) कडप्पा से तिरुपति तक एनएच-716 के लंबे समय से विलंबित 4-लेन निर्माण की स्थिति क्या है और इस विलम्ब के कारण क्या हैं; और

(घ) क्या सरकार यात्रियों और स्थानीय उद्योगों को और अधिक कठिनाई से बचाने के लिए सर्विस रोड की कमियों को शीघ्र दूर करने और एनएच-716 को तेजी से पूरा करने के लिए निर्देश जारी करेगी और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री

(श्री नितिन जयराम गडकरी)

(क) और (ख) राष्ट्रीय राजमार्ग-71 के रेनिगुंटा-नायडूपेटा खंड पर आवश्यक और व्यवहार्य स्थानों पर सर्विस रोड उपलब्ध कराए गए हैं। मुचिवोलु और वेंकटगिरी को जोड़ने वाली सड़क पहले से ही सर्विस रोड के माध्यम से राष्ट्रीय राजमार्ग-71 से जुड़ी हुई है।

भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई), सुरक्षा परामर्शदाता, स्वतंत्र इंजीनियर और परियोजना के रियायतग्राही के प्रतिनिधियों द्वारा संयुक्त रुप से स्थल निरीक्षण किया गया तथा पाया गया कि वेंकटगिरी-मुचिवोलु को मुख्य मार्ग से जोड़ने वाली सीधी पहुंच सड़क का प्रावधान सुरक्षा की दृष्टि से उस स्थल पर व्यवहार्य नहीं है।

(ग) और (घ) कडप्पा से रेनिगुंटा तक राष्ट्रीय राजमार्ग-716 को चार लेन का बनाने का कार्य, जिसकी लंबाई 121.9 किलोमीटर है, दो पैकेजों में शुरू किया गया है और कार्य का ठेका पहले ही दिया जा चुका है और 28.01.2025 को करार पर हस्ताक्षर हो चुके हैं। स्थल की आवश्यकताओं और भूमि की उपलब्धता के अनुसार राजमार्ग के साथ सर्विस रोड प्रस्तावित किए गए हैं।

परियोजना की 121.9 किलोमीटर लंबाई में से 31.9 किलोमीटर वन, वन्यजीव/पारिस्थितिकी-संवेदनशील क्षेत्र (ईएसजेड) से होकर गुज़र रही है और वन एवं वन्यजीव/ईएसजेड मंज़ूरी प्राप्त करने में देरी हुई।

अब तक, चरण-1 संबंधी वन मंज़ूरी सहित परियोजना की सभी मंज़ूरियाँ प्राप्त हो चुकी हैं। वन मंज़ूरी और रियायतग्राहियों द्वारा वित्तीय समापन हेतु कार्य अनुमति प्राप्त होने पर कार्य शुरू हो सकता है।

*****